

ग्रह : सूर्य

सूर्य खगोलीय तथ्य

- सूर्य हमारे सौरमंडल के सबसे बड़े तारा हैं और हीलियम तथा हाइड्रोजन से बने हैं।
- सूर्य का व्यास 1400000 किलोमीटर का है।
- सौर मंडल के द्रव्यमान का 99 फ़ीसदी सूर्य द्वारा ग्रहीत है।
- पृथ्वी से सूर्य की दूरी 1490 लाख किलोमीटर है।
- सूर्य की प्रतिदिन की भूगर्भीय गति 00:59':08" है।
- क्योंकि सूर्य सभी ग्रहों के केंद्र में है, इसीलिए वह कभी वक्री नहीं प्रतीत होते।

पौराणिक कथा एवं तथ्य

- हमारे ब्रह्मांड में उपस्थित ऊर्जा और जीवन केवल सूर्य भगवान के कारण ही है, सूर्य लोक को भुवः मंडल कहते हैं और हमारे लोक को भूमंडल कहते हैं।
- दिति और अदिति दोनों बहने हैं, दिती सभी असुरों की मां है और अदिति सभी देवताओं की मां है।
- ऋषि कश्यप सप्तर्षियों में मुख्य ऋषि हैं।

- अदिति और ऋषि कश्यप की 12 संतान हुईं। इंद्र, विष्णु, विवस्वान, मितर, अमशुमान, धता, त्वस्ता, पूसा, वरुण, आर्यमा, भग, सविता, यही 12 संताने 12 आदित्य के नाम से जानी जाती हैं ।
- ब्रह्मा जी ने 12 आदित्य में सविता को चुना और उन्हें आशीर्वाद दिया कि बाकी सभी आदित्य सविता में समा जाएंगे और केवल सविता ही पूजे जाएंगे ।
- यह 12 आदित्य अपने कार्य /ऊर्जा अलग अलग ही निर्दिष्ट करते हैं इसीलिए 12 महीने हुए और इन महीनों पर 12 आदित्य का स्वामित्व है, इसीलिए विभिन्न मौसम भी होते हैं, यदि केवल एक आदित्य होते तो केवल एक ही मौसम होता।
- सूर्य देव की पत्नी संजना हुई, जोकि विश्वकर्मा जी की बेटी हैं विश्वकर्मा जी देवताओं के वास्तुकार हैं ।
- उनकी तीन संताने हैं वैवस्वत, यम और यामिनी। सूर्य देव के प्रकाश के कारण संजना उनके साथ नहीं रह पा रही थी ।
- अतः एक दिन संजना ने घर छोड़कर जाने का निर्णय ले लिया और घर पर अपनी छाया को छोड़ दिया ।

- संजना कुछ समय तक अपने पिता के यहां रहीं तदोपरांत एक घोड़ी का स्वरूप लेकर पहाड़ों में तपस्या करने चली गई ।
- सूर्य देव को इन सब स्थितियों के बारे में भान नहीं था और वह संजना की छाया के साथ रहते रहे। छाया से उन्हें तीन संताने हुईं जिनके नाम सवर्नी, शनि (शनि ग्रह के नाम से जाने गए) और ताप्ती (नदी के नाम से जानी गई, दूसरा नाम यमुना भी है)।
- सूर्य देव शनि को नापसंद इसलिए करते थे क्योंकि वे उनकी पत्नी के संजना के पुत्र नहीं वरन उनकी छाया के पुत्र हैं ।
- क्योंकि यमुना शनि की बहन हैं इसीलिए शनि के उपाय स्वरूप यमुना में स्नान और यमुनाष्टक का पाठ भी किया जाता है ।
- कुछ समय पश्चात जब सूर्य को यह पता चला कि जो उनके घर में हैं वह उनकी पत्नी नहीं वरन उनकी छाया है, तो सूर्य देव अत्यधिक क्रोधित हो गए और छाया से हुई संतानों को भी अपना नहीं माना और वे अपनी पत्नी की खोज में चले गए ।

- सूर्य देव ने देखा कि उनकी पत्नी घोड़ी का रूप लेकर एक पर्वत पर साधना कर रही हैं, तो वह भी एक अश्व का रूप लेकर प्रेमोन्मत्त होकर उनके पास गए, जिसके फल स्वरूप अश्व रूप में जुड़वा संतान हुई जिनका नाम अश्विनी कुमार पड़ा, जो कि देवताओं के चिकित्सक हुए।
- संजना से पूछने पर सूर्य को पता चला कि उनके प्रकाश के कारण संजना उन्हें छोड़कर चली गई थी इसीलिए सूर्य ने अपनी ऊर्जा को 16 भागों में बांट दिया, जिससे पृथ्वी आदि विभिन्न ग्रह बने इसके पश्चात ।
- सूर्य अपने मूल स्वरूप के सोलवाँश हो गए तो संजना उनके पास रहने वापस आ गई ।
- सूर्य देव ने अपनी ऊर्जा से 7 भाग निकाले और वे सात भाग उनके रथ के घोड़े बने, जिनके नाम हैं, गायत्री, बृहती, उस्विक, जागती, त्रिस्तुप, अनुष्टुप, पंक्ति। इस रथ को अरुण चलाते हैं ।
- यही सात घोड़े इंद्रधनुष के रंग भी हैं, आकाश में इंद्रधनुष यह दर्शाता है कि सूर्य देव प्रसन्न हैं, इसीलिए इंद्रधनुष देख सभी प्रसन्न हो जाते हैं और यह सात रंग ही रंगों की उत्पत्ति का कारण हुए ।
- ब्रह्म मुहूर्त में निकली सूर्य की पहली किरण गायत्री है, इसलिए जो नित्य गायत्री करते हैं वे स्वस्थ और भाग्यवान रहते हैं और ज्योतिष के लिए भी गायत्री सबसे महत्वपूर्ण है।

ज्योतिषीय तथ्य

- सूर्य प्रतापी ग्रह हैं और राजा हैं, सूर्य हमारी आत्मा, इच्छाशक्ति, पिता पैतृक संबंध, राजा, वरिष्ठ अधिकारियों का प्रतिनिधित्व करते हैं ।
- सूर्य अग्नि तत्व है।
- सिंह इनकी राशि है ।
- एक राशि में सूर्य 30 दिन रहते हैं।
- सूर्य की एक ही दृष्टि है, सप्तम ।
- सूर्य की दिशा पूर्व है, उसे ईशान भी कहते हैं, ईशान भगवान शिव का दूसरा नाम है।
- सूर्य का तत्व सोना या स्वर्ण है ।
- सूर्य का रत्न माणिक्य है।
- सूर्य सरकार संबंधी कार्य, सरकारी नौकरी, राजनीति, राजनीतिज्ञ, नौकरशाहों आदि का प्रतिनिधित्व करते हैं ।
- सूर्य हड्डियों के कारक हैं ।
- सूर्य की राशि : सिंह ।
- सूर्य की एक ही राशि है : सिंह ।
- सिंह स्थिर राशि है ।
- सिंह राशि का तत्व अग्नि है ।

- चिह्न के गुणों को समझें तो सिंह बलवान होता है, राजा के गुण होते हैं, नेतृत्व, बहादुर, अधिकार जमाने वाला, बहुत ही सतर्क, महत्वाकांक्षी, निरंकुश, एकतंत्रीय, अकडू, स्वतंत्र, दृढ़ इच्छा वाले, संदेह जनक, हिंसक, क्रोधी और अहंकारी, यह सभी गुण सिंह राशि / लग्न के जातकों के होते हैं ।
- शारीरिक स्तर पर बलवान, लंबी चौड़ी कद काठी, मजबूत कंधे ।
- ये जातक हर एक परिस्थिति में दृढ़, उत्साही, बलवान होते हैं ।
- वे स्वयं कम कार्य करने वाले होते हैं परंतु चाहते हैं कि दूसरे उनके कार्य करें ।
- यह जातक किसी भी परिस्थिति में समझौता नहीं करते ।
- सिंह राशि के जातक तामसिक भोजन में रुचि रखते हैं ।
- सूर्य हमारे नेतृत्व व प्राधिकार की प्रवृत्ति, योग्यता, प्रतिभा का प्रतिनिधित्व करते हैं ।
- सूर्य के अभिव्यंजित गुण : भव्य, प्रतापी, प्रबल, अधिकारयुक्त, प्रमुख पिता या पिता तुल्य, बलवान।
- सूर्य का रंग चमकीला लाल है, परंतु हम सूर्य को भगवा/ केसरिया रंग से जोड़ते हैं ।
- किसी भी जातक की कुंडली में सूर्य की स्थिति यह तय करेगी कि उसका चरित्र कैसा होगा, उसके पिता और पिता तुल्य लोगों से संबंध कैसे होंगे, उसे पैतृक संपत्ति मिलेगी या नहीं सरकारी कार्यों में सफलता मिलेगी या नहीं ।
- सभी बड़े अधिकारी सरकारी अधिकार ऑफिस के बॉस आदि राजनीतिज्ञ आदि सब सूर्य के प्रतिनिधित्व में हैं ।
- अतः जब हम सूर्य की पूजा करते हैं तो सूर्य के शुभ फल प्राप्त होते हैं ।

- सूर्य क्योंकि राजा हैं इसीलिए धन भी सूर्य ही देते हैं, हमारी ख्याति के कारक भी सूर्य ही हैं, यदि किसी का सूर्य पीड़ित हो तो वह बुरे कार्यों के लिए बदनाम हो सकता है, क्योंकि पीड़ित सूर्य का जातक धर्म से विमुख हो सकता है ।
- सूर्य अग्नि तत्व है इसीलिए सभी पूजा संस्कारों में अग्नि का उपयोग होता है, यह इसलिए क्योंकि अग्नि हर वस्तु आदि को शुद्ध कर देती है, जैसे हम याद करें तो विवाह में हम अग्नि के फेरे लेते हैं और बाकी सभी कर्मकांड में अग्नि में हवन करते हैं, अतः इसका अभिप्राय यह है कि हम सूर्य जो कि धर्म के कारक हैं उन्हें साक्षी मानकर किसी भी कार्य को करते हैं या उसकी प्रतिज्ञा करते हैं, यदि हम किसी प्रतिज्ञा का अनुपालन नहीं करते तो हम धर्म की अवमानना करते हैं और अशुभ कर्मों को आकर्षित करते हैं।
- हमारी संस्कृति में इसीलिए मृत देह को जलाते हैं क्योंकि अग्नि में पूरा मृत शरीर शुद्ध हो जाता है और आत्मा मुक्त हो जाती है ।
- सूर्य हमारी पाचन क्रिया में भी सहायक होते हैं क्योंकि वह जठराग्नि के कारक हैं ।
- सूर्य हमारी पाचन क्रिया में भी सहायक होते हैं, अतः यदि किसी सिंह के जातक का पाचन तंत्र खराब हो तो उसका मन और विचार दोनों ही खराब हो जाते हैं ।
- यदि सिंह राशि का जातक किसी के अधीन कार्य करने को बाधित किया जाए तो या तो वह कार्य छोड़ देगा या अवसाद का शिकार हो जाएगा ।
- किसी जातक का महीना कैसा जाएगा यह सूर्य की स्थिति से देखते हैं ।

- सिंह के जातक बड़े उद्यम प्रारंभ करते हैं या तो नेतृत्व के क्षेत्र में जाते हैं ।
- इस राशि / लग्न के जातक केवल अपने गुरु की सुनते हैं और वह भी तब जब वह सुझाव मांगे ।
- इन जातकों को उस क्षेत्र में कार्य करना चाहिए जहां उन्हें कार्य में स्वतंत्रता मिले ।
- सिंह राशि के जातक कई बार धोखे खाते हैं, सिंह लग्न नहीं ।
- यह जातक अपने सिद्धांतों पर समझौता नहीं करते इसीलिए समाज में अनुपयुक्त हो जाते हैं।